राजा॰ लक्ष्मणसिंह अनुवादित

मेघदूत

श्यामसुन्दरदास बी॰ ए॰ संपादित

१९२५

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, द्वारा प्रकाशित

मूल्य ॥=) आना

निवेदन

राजा लक्ष्मणसिंह का जन्म ६ अक्टूबर सन् १८२६ को आगरे में हुआ था। पाँच वर्ष की अवस्था में इनका विद्यारम्भ कराया गया और ८ वर्ष तक ये घर पर संस्कृत, हिन्दी और फ़ारसी पढ़ते रहे। यज्ञोपवीत संस्कार हो चुकने पर १३ वर्ष की अवस्था में ये स्कूल में पढ़ने लगे और २० वर्ष की अवस्था में इन्होंने उस समय की सबसे ऊँची परीक्षा में उत्तीर्ण हो कालिज की पढ़ाई समाप्त की। सन् १८५० ई० में ये अनुवादक के पद पर नौकर हुए। पाँच ही वर्ष में ये तहसीलदार नियत हुए। यहाँ इन्होंने इस योग्यता से काम किया कि दो ही वर्षों में ये डिप्टी कलक्टर बना दिये गए। इस पद पर ये निरंतर उन्नति करते गए और अन्त में सन् १८८८ में ४००) रु० मासिक की पेंशन लेकर अपने घर आगरे में रहने लगे। इनका देहांत आगरे ही में १४ जुलाई सन् १८९६ को हुआ।

सन् १८५७ के बलवे के समय इन्होंने गवर्मेंट की बड़ी सहायता की थी। उसके उपलक्ष में इन्हें आगरे के पास ही एक इलाक़ा माफ़ी मिला और २०००) की खिलअत दी गई तथा सन् १८७७ के दिल्ली-दर्बार में राजा की उपाधि अर्पित हुई।

सबसे पहले सन् १८६१ में इन्होंने शकुन्तला नाटक का हिन्दी गद्य में अनुवाद किया। इस अनुवाद की बड़ी प्रशंसा हुई, यहाँ तक कि इँगलैंड में इसका एक संस्करण अँगरेज़ी में टीका-टिप्पणी सहित छपा जो अब तक प्राप्य है। पीछे सन् १८८९ में राजा लक्ष्मणसिंह ने इस नाटक का दूसरा संस्करण किया जिसमें गद्य के स्थान में गद्य और पद्य के स्थान में पद्य में अनुवाद हुआ। यह अनुवाद भी बहुत अच्छा हुआ। सच बात तो यह है कि राजा साहब ने इस नाटक के अनुवाद में जैसी सुन्दर, रसीली और सीधी भाषा का प्रयोग किया है वैसी आज तक किसी और की लेखनी से नहीं निकली।

सन् १८७८ में राजा साहब ने रघुवंश का अनुवाद हिन्दी गद्य में किया। यह अनुवाद भी अच्छा हुआ है।

तीसरा ग्रंथ राजा साहब का मेघदूत का पद्यात्मक अनुवाद है। सन् १८८२ में इस ग्रंथ के पूर्वार्द्ध का अनुवाद प्रकाशित हुआ और सन् १८८४ में संपूर्ण ग्रंथ का। इसके अनन्तर सन् १८९३ में इस ग्रंथ का तीसरा संस्करण राजा साहब ने छपवाया। अब यह ग्रंथ एक प्रकार से अप्राप्य है। कठिनता से कहीं-कहीं इसकी प्रति देखने को मिल जाती है। यद्यपि मेघदूत के अनेक अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं और बराबर प्रकाशित होते जाते हैं पर इस बात के कहने में कोई भी संकोच नहीं होता कि राजा साहब का अनुवाद बहुत ही अच्छा हुआ है और कई बातों में इसकी समता दूसरे अनुवाद नहीं कर सकते।

इन तीन ग्रंथों के अतिरिक्त राजा साहब ने "प्रजाहित" नाम का एक पत्र निकाला था और "दंड-संग्रह" नाम से ताजीरात हिन्द का हिन्दी में अनुवाद किया था। गवर्मेंट के लिए इन्होंने कई अन्य ग्रंथों का अनुवाद भी किया है, परन्तु राजा साहब की उत्कृष्ट कृतियों में से केवल शकुंतला, रघुवंश और मेघदूत के अनुवाद हैं जो हिंदी संसार में उनकी कीर्ति बनाए रखने के लिये अलम् हैं।

यद्यपि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी गद्य को एक स्थिर रूप देकर उसको परिष्कृत और प्रसाद-गुण-सम्पन्न बनाया परन्तु लल्लूलाल के पीछे राजा लक्ष्मणसिंह ने ही उसके नये रूप को काट-छाँटकर सुन्दर और मनोहर बनाया। हिन्दी गद्य को उत्कृष्ट रूप देने का यश भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को प्राप्त है पर इसमें संदेह है कि यदि राजा लक्ष्मणसिंह अपनी लेखनी द्वारा उसे एक उत्तम रूप न दे गए होते तो भारतेन्दुजी को अपने उद्योग में इतनी सफलता प्राप्त होती।

लखनऊ
१—१०—१७

श्यामसुंदरदास

प्रथम भूमिका

उपमा अलंकार में कालिदास से बढ़कर अब तक कोई कवि भारतवर्ष में नहीं हुआ और उनके ग्रंथों में मेघदूत भी इसी अलंकार की उत्कृष्टता के कारण सराहने योग्य गिना जाता है। इस छोटे से काव्य को पढ़कर पढ़नेवाले के चित्त पर अंक सा हो जाता है कि विधाता ने कालिदास को कितनी बड़ी कल्पनाशक्ति दी थी। मनुष्य की प्रकृति जानने और स्थान का वर्णन करने और स्वभाव का लालित्य दिखाने में यह कवि एक ही हुआ है। मेघदूत का अवलोकन करने से ये उत्तम गुण कालिदास के भली भाँति दीखते हैं। उनके वाग्विलास की बड़ाई जितनी की जाय थोड़ी है। इस काव्य का प्रकरण संक्षेप से यह है कि कोई यक्ष अपने काम में असावधान हो गया। तब उसके स्वामी कुबेर ने कोपकर उसे बरस दिन के लिए देशनिकाला दिया। इस शाप के वश वह अलकापुरी को छोड़ दक्खिन में रामगिरि पर्वत पर अकेला जा रहा। जब उस पहाड़ में रहते कुछ दिन बीत गये और असाढ़ का बादल उमड़ा, उस विरही को अपनी स्त्री की बहुत सुधि आई, उसने मन में सोचा कि प्यारी के पास कुछ कुशल का सँदेसा भेजना चाहिए। बादल के सामने खड़ा हुआ इसी सोच-विचार में था कि प्रेम की अधिकता में विह्वल हो गया, बादल ही को दूत बनाकर अलकापुरी का मार्ग बताने और अपना सँदेसा सुनाने लगा। रामगिरि से अलका तक जो-जो नदी और पहाड़ और तीर्थ और मुख्य-मुख्य नगर और देश हैं उनका थोड़ा-थोड़ा पता देता गया है। पहले ६५ श्लोकों में अलका तक पहुँचाया है इसी का नाम "पूर्वमेघ" है, फिर "उत्तरमेघ" के ५१ श्लोकों में अलकापुरी की शोभा और यक्षिणी की दशा वर्णन करके अपना सँदेसा बतलाया है। निदान जब बादल से

कहे हुए सँदेसे का वृत्तान्त कुबेर के कान तक पहुँचा उसने दयालु होकर यक्ष का अपराध क्षमा किया और स्त्री-पुरुष का संयोग बरस दिन बीतने से पहले ही करा दिया।

हमने हिन्दी छन्दों में यह उल्था अभी पूर्वमेघ का किया है, परन्तु विचार है कि यदि अवकाश मिला तो उत्तर का भी करेंगे। एक भाषा के छन्द को दूसरी भाषा के छन्द में उल्था करना कुछ तो आप ही कठिन होता है तिस पर हमारा नियम है कि मूल से उल्था न्यूनाधिक न हो और भाव में भी कुछ विरोध न आवे। इसी से कठिनाई अधिक दीखती है। फिर भी हम आशा करते हैं कि हमारे इस तुच्छ आरम्भ को देखकर कोई हिन्दी भाषा को अल्पता का दोष न देगा किन्तु विदित होगा कि यह भाषा बड़े विस्तार की है। इति शुभम्।

२४ जून १८८२ ई०]
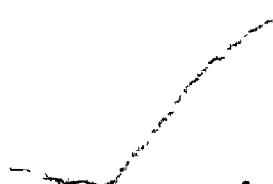
दूसरी भूमिका

सन् १८८२ ई० में मेघदूत के पूर्वार्द्ध का अनुवाद हिन्दी भाषा के छन्दों में करके मैंने प्रतिज्ञा की थी कि यदि अवकाश मिला तो उत्तरार्द्ध का अनुवाद भी इसी भाँति करके प्रकाशित कराऊँगा। दैवकृपा से वह प्रतिज्ञा पूरी हुई। अब दोनों भाग इकट्ठे छापे जाते हैं।

२८ फ़रवरी १८८४ ई०]

तीसरी भूमिका

जितनी आशा थी उससे अधिक माँग इस ग्रन्थ की हुई इससे जाना गया कि हिन्दी के रसिकों में इसने पूरा आदर पाया। पहले जो कुछ दोष रह गये थे अब तीसरी बार के छापे में दूर कर दिये गये हैं।

आगरा २२ जौलाई १८९३ ई०]

लक्ष्मणसिंह।

श्रीकालिदासकृत

मेघदूत

॥ श्रीः ॥

मेघदूतपूर्वार्द्धम्

मन्दाक्रान्तावृत्तम्

कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येन भर्त्तुः ॥
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्य्याश्रमेषु ॥ १ ॥
तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
नीत्वा मासान् कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः ॥
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श ॥ २ ॥
तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः केतकाधानहेतो-
रन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ ॥

यक्षः = देवयोनिविशेषः । विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ॥

प्रथमदिवसे = पाठान्तरे "प्रशमदिवसे" ॥

केतकाधानहेतुः = केतक्या गर्भाधानस्य कारणम् ॥

विरही यक्ष ।